अमर उजाला

प्रवाह

नई दिल्ली । शुक्रवार, 8 मार्च 2019

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

युवाओं को नौकरी ढूंढने वाले के बजाय नौकरी देने में सक्षम बनाने की जरूरत है...
- एपीजे अब्दुल कलाम

संतकबीर नगर की घटना से भाजपा की साख को तो धक्का लगा ही है, साथ ही इसने राजनेताओं के सार्वजनिक व्यवहार में आ रही गिरावट को भी रेखांकित किया है। काम से अधिक श्रेय लेने की होड़ को जायज नहीं ठहराया जा सकता।

अशोभनीय और अमर्यादित

उत्तर प्रदेश के संतकबीर नगर के भाजपा सांसद और उन्हीं की पार्टी के एक विधायक के बीच हुई मारपीट तथा गाली-गलौज की घटना अपवाद भले न हो, लेकिन इसने राजनेताओं के सार्वजनिक आचरण की शर्मनाक तस्वीर पेश की है। बताया जाता है कि सांसद शरद त्रिपाठी और मेंहदावल के भाजपा विधायक राकेश सिंह बघेल के बीच अदावत पुरानी है, जो उस वक्त खुलकर सामने आ गई, जब प्रभारी मंत्री आशुतोष टंडन की मौजूदगी में जिला योजना समिति की बैठक में एक सड़क के निर्माण का श्रेय लेने का जिक्र आया। त्रिपाठी संबंधित अभियंता से जानना चाहते थे कि शिला पट्ट पर उनका नाम क्यों नहीं, इस पर उनकी बघेल के साथ झड़प हो गई और बात जूतम-पैजार तक पहुंच गई। दोनों पक्षों ने मर्यादा और शिष्टाचार की सारी हदें लांघ दी, जिस पर टंडन का भी बस नहीं चला। त्रिपाठी और बघेल के बीच इस टकराव के पीछे आसन्न लोकसभा चुनाव भी एक कारण बताया जा रहा है, जिसमें मौजूदा सांसद का टिकट काटे जाने का अंदेशा है। वहीं इससे पहले एक सार्वजनिक कार्यक्रम में त्रिपाठी ने बघेल सहित क्षेत्र के अन्य विधायकों को मंच पर बैठने नहीं दिया था। न तो ऐसा व्यवहार और न ही श्रेय लेने की ऐसी होड़ नई है। हाल ही में मध्य प्रदेश के ग्वालियर में एक अस्पताल के शिलान्यास को लेकर कांग्रेस और भाजपा के कार्यकर्ता आपस में भिड़ गए थे। दरअसल कांग्रेस नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया ने जहां शिलान्यास किया, वहां भूमि पूजन पहले ही पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान कर चुके थे। ऐसा ही टकराव कुछ महीने पहले करतारपुर कॉरिडोर के शिलान्यास के मौके पर देखा गया था, जब शिलापट्ट पर दर्ज अकाली नेताओं के नाम पर एक कांग्रेस नेता ने कालिख पोत दी थी। कुछ वर्ष पहले केरल में एक नेशनल हाई-वे प्रोजेक्ट के शिला पट्ट पर वहां के प्रदेश भाजपा अध्यक्ष का नाम अंकित किए जाने पर भी ऐसा विवाद हुआ था। संतकबीर नगर की घटना से भाजपा की साख को तो धक्का लगा ही है, जो खुद को सबसे अनुशासित पार्टी बताती है, साथ ही इसने राजनेताओं के सार्वजनिक व्यवहार में आ रही गिरावट को भी रेखांकित किया है। सिर्फ इसलिए नहीं कि सोशल मीडिया के इस दौर में हर छोटी-बड़ी घटना को प्रसारित होते देर नहीं लगती, बल्कि इसलिए भी कि जनप्रतिनिधियों से ऐसे व्यवहार की अपेक्षा नहीं की जाती, पार्टियों को ऐसे नेताओं पर कड़ाई से अंकुश लगाना चाहिए।

रोजगारहीन विकास का सिद्धांत झूठा

रोजगार को लेकर चल रही बहस निराधार बयानों के कारण बेहद भयावह हो गई है, क्योंकि मीडिया में रोजगार के विकास की वास्तविक स्थिति को बेहद कम करके दिखाया जा रहा है। हालिया घटनाक्रम में आंकड़ों पर काम करने वाले एक थिंकटैंक ने दावा किया कि भारत में कामकाजी आबादी में पिछले वर्ष एक करोड़ की कमी हुई है। ये आंकड़े, लगता है, सीएमआईई द्वारा अवसरवादी ढंग से 1.40 लाख उत्तरदाताओं के ऋणात्मक नमूनों से प्रारंभिक अनुमानों पर निर्धारित समय से दो महीने पहले जारी किए गए हैं, जबकि 5.5 लाख उत्तरदाताओं के पूर्ण नमूने के आंकड़ों को फरवरी, 2019 के शुरू में जारी किया जाना था। जाहिर है, इसका संबंध आने वाले चुनाव से है, जिसके चलते इसे निर्धारित समय से पहले ही जारी कर दिया गया!

रोजगार के मामले में एक स्पष्ट दृष्टिकोण प्राप्त करने के लिए हमें उन स्रोतों के आंकड़ों को समझना होगा, जहां से रोजगार सृजित होते हैं और जो रोजगार के सबसे बड़े योगदानकर्ताओं के बदलावों का आकलन करता है। परिवहन का क्षेत्र भारत में सबसे ज्यादा रोजगार सृजित करने वाले क्षेत्रों में से एक है। हमने पिछले कुछ वर्षों में वार्षिक आधार पर इस क्षेत्र द्वारा रोजगार सृजन का आकलन करने के लिए एक अध्ययन किया है। हमने वाणिज्यिक वाहनों (मध्यम और भारी और हल्के वाणिज्यिक वाहनों), यात्री वाहनों (यात्री कारों, उपयोगिता वाहन और वैन), तिपहिया वाहनों और ट्रैक्टरों की घरेलू बिक्री के आंकड़ों पर विचार किया है, ताकि अर्थव्यवस्था में नौकरियों का अनुमान लगाया जा सके। आंकड़े सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (एसआईएम) और ट्रैक्टर ऐंड मैकेनाइजेशन एसोसिएशन (टीएमए) से एकत्र किए गए हैं, जो ऑटोमोबाइल और कृषि मशीनीकरण (ट्रैक्टर बिक्री के लिए) उद्योगों के लिए शीर्ष निकाय हैं। ये निकाय भारत के विभिन्न ऑटोमोबाइल निर्माताओं से एकत्र किए गए उत्पादन, बिक्री और निर्यात के रुझानों पर नियमित रूप से आंकड़े जुटाते और प्रसारित करते हैं।

परिवहन का क्षेत्र देश में सबसे ज्यादा रोजगार पैदा करने वाले क्षेत्रों में है और पिछले चार साल में इसी क्षेत्र में 1.4 करोड़ नौकरियां पैदा हुई हैं।

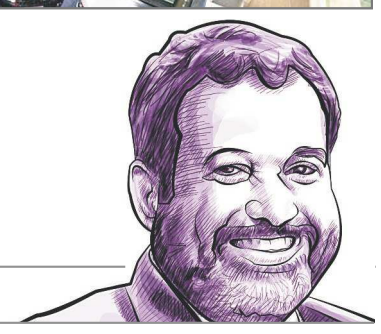

टीवी मोहनदास पई

भारत में खरीदे जाने वाले हर वाहन से रोजगार पैदा होता है। उदाहरण के लिए, वाणिज्यिक वाहन आम तौर पर दो नौकरियां सृजित करते हैं, एक ऑटो रिक्शा औसत 1.5 नौकरियों का सृजन करता है, क्योंकि यह आमतौर पर विभिन्न ड्राइवरों द्वारा कई पारियों में उपयोग किया जाता है। एक टैक्सी से एक रोजगार का सृजन होता है और फिर कई लोगों के पास अपनी कार चलाने के लिए ड्राइवर होते हैं। इसलिए हम मान सकते हैं कि प्रति चार कार की बिक्री से एक रोजगार का सृजन होता है। ट्रैक्टर से भी प्रति वाहन बिक्री से एक रोजगार का सृजन होता है। फिर हम कुल घरेलू बिक्री से प्रतिस्थापन दर को घटाते हैं, यात्री वाहनों में उचित प्रतिस्थापन दर 20 फीसदी, वाणिज्यिक वाहनों में 25 फीसदी, तिपहिया वाहनों में 10 फीसदी (उपयोग की लंबी अवधि करीब 10-15 साल होने के कारण) और ट्रैक्टर पर 20 फीसदी होती है। ऐसा इन वाहनों की बिक्री से पैदा हुई नई नौकरियों और मौजूदा श्रमिकों द्वारा अपने वाहनों के उन्नयन पर विचार करने के लिए किया जाता है। यह संभव है कि बिक्री और वास्तविक उपयोग के बीच एक अंतराल हो, लेकिन समय के साथ यह सामान्य हो जाता है। विश्लेषक नई नौकरियों की गणना करने के लिए प्रतिस्थापन के अपने अनुमान लगा सकते हैं।

यहां ध्यान दिया जाना चाहिए कि इस क्षेत्र में रोजगार सृजन की गणना करते हुए हमने इससे पैदा होने वाली सहायक नौकरियों पर विचार नहीं किया है, जैसे मरम्मत, सर्विसिंग, स्पेयर्स पार्ट्स की बिक्री, सीधे या सेकंड हैंड बिक्री से पैदा रोजगार और स्वयं वाहनों की बिक्री और इन वाहनों के कबाड़ और अंत में बीमा और वित्त पोषण से पैदा होने वाले रोजगार। ये सहायक नौकरियां अपने आप में आकार में महत्वपूर्ण हैं।

हालांकि, इस अध्ययन के लिए हमने केवल प्रत्यक्ष रोजगार सृजन पर ध्यान दिया है, फिर भी पैदा होने वाले रोजगार की संख्या स्पष्ट रूप से पर्याप्त हैं। हमने राजग सरकार के सत्ता में आने के वक्त एक अप्रैल, 2014 से 31 दिसंबर, 2018 तक के वाहनों की बिक्री के वार्षिक आंकड़ों को अपने अध्ययन में शामिल किया है। वर्ष 2014-15 में परिवहन क्षेत्र में कुल 20,02,885 रोजगार का सृजन हुआ, जबकि वर्ष 2015-16 में 27,07,990, वर्ष 2016-17 में 28,37,951, वर्ष 2017-18 में 33,69,67 और वर्ष 2018 के नौ महीनों के दौरान 27,85,630 रोजगार का सृजन हुआ। इस तरह राजग के शासन काल में सिर्फ परिवहन के क्षेत्र में 1.4 करोड़ रोजगार का सृजन हुआ। इस कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा एक महीने में लगभग 20-25 हजार रुपये की अच्छी आय अर्जित करता है। इन नौकरियों के लिए स्पष्ट रूप से मांग बढ़ी है। करीब 70 फीसदी माल की ढुलाई भारत में सड़क मार्ग से वाहनों के जरिये होती है और माल ढुलाई में रेलवे की हिस्सेदारी घटती जा रही है। हमारी अर्थव्यवस्था का आकार 26 खरब डॉलर का हो गया, जो सात फीसदी से ज्यादा की दर से विकास कर रहा है, और इससे भारी संख्या में रोजगार पैदा हो रहे हैं। बस हमें नौकरी पैदा करने वाले क्षेत्रों को देखना होगा और रोजगार की संख्या का अनुमान लगाना होगा।

ऐसे आलोचक हो सकते हैं, जो रोजगार से संबंधित हमारे अनुमानों की आलोचना कर सकते हैं और हम उनका स्वागत करेंगे। हम स्वागत करेंगे कि प्रतिस्थापन के बारे में वे अपना अनुमान पेश करें और रोजगार सृजन से संबंधित अपने आंकड़े लेकर सामने आएं। रोजगार सृजन से संबंधित अंतिम आंकड़े जो भी हों, लेकिन जो भी इस आंकड़े को देखता है, वह निर्विवाद रूप से इस बात की पुष्टि करता है कि परिवहन और अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन हो रहा है। इसके अलावा औपचारिक रूप से रोजगार की गणना ईपीएफओ, ईएसआई और एनपीएस के जरिये होती है और पेशेवर क्षेत्र में रोजगार की संख्या और भी बड़ी है। रोजगार विहीन विकास का सिद्धांत उन विश्लेषकों ने गढ़ा है, जिन्होंने इस आंकड़े को नहीं देखा है। वास्तव में वे फर्जी हैं।

लेखक मणिपाल ग्लोबल एजुकेशन सर्विस के चेयरमैन हैं

अंतर्ध्वनि

>> महमूद दरवेश

पेड़ और कुछ नहीं, एक जीती-जागती दुआ है

पेड़ पेड़ की बहन हो या फिर अच्छा-भला पड़ोसी, बड़े पेड़ छोटों का बहुत ख्याल रखते हैं। जब जरूरत होती है, उन्हें छाया देते हैं। लंबे पेड़ ठिगने पेड़ों के प्रति दयालु होते हैं, रात के समय अपने पास से परिंदों को उन पर भेज देते हैं, जिससे वे अकेला न महसूस करें। कोई पेड़ कितना भी बड़ा और बलशाली हो, छोटे पेड़ों के फल नहीं छीनता।

यदि कोई बांझ रह जाए, तो दूसरा बाल बच्चों वाला पेड़ उसका उपहास नहीं करता। कोई पेड़ दूसरे पर आक्रमण नहीं करता और न ही लकड़हारे जैसा बर्ताव करता है। जब एक पेड़ को काटकर नाव बना दिया जाता है, तो वह पानी पर तैरना सीख लेता है। जब उससे दरवाजा तराश दिया जाता है, तो वह सीख लेता है कि कैसे बरतनी है अंदर की गोपनीयता। जब पेड़ से कुर्सी बना दी जाती है, वह फिर भी नहीं भूलता कि उसके सिर पर पहले आकाश हुआ करता था। जब उसे काटकर टेबल बना दिया जाता है, तो वह बैठ कर लिखने-पढ़ने वाले कवियों को सिखाता है कि कभी भी कठफोड़वा नहीं बनना। पेड़ में क्षमाभाव और चौकन्नापन होता है। वह न तो कभी सोता है, न सपने देखता है, बल्कि सपने देखने वालों के राज अपने आगोश में छुपाकर सुरक्षित रखता है। दिन भी रात भी, वहां से गुजरने वालों का सम्मान करते हुए और जन्नत की हिफाजत करते हुए। पेड़ और कुछ नहीं एक जीती-जागती दुआ है, जिसके हाथ आसमान में ऊपर उठे हुए हैं। आंधियों में जब हवा इसको धक्का देती है, तो यह बड़ी अदा से हौले से झुक जाता है, जैसे झुकी होती है हरदम ऊपर ताकती हुई कोई नन। कवि पहले कह चुका है : काश हमारे बच्चे पत्थर होते। दरअसल उसको कहना चाहिए था : काश हमारे बच्चे पेड़ होते।

-फलस्तीन के मशहूर कवि

मंजिलें और भी हैं

>> दीपाली धर्माधिकारी

बाइक चलाने से पहले ही रिपेयरिंग का काम सीखा

मैं पुणे में रहती हूं और नवी पेठ में एक गैराज चलाती हूं। हर पेशे में अब लड़कियां आ गई हैं। लेकिन गैराज में महिलाओं को वाहनों की मरम्मत करते हुए देखना अब भी विरल दृश्य है। पर मैं पिछले करीब तीस साल से यह काम कर रही हूं। यह गैराज मेरे पिता का था। बचपन में बाइक मुझे काफी आकर्षित करते थे। बाइक चलाते हुए मैं पूरा देश घूमना चाहती थी। लेकिन तब मेरी उम्र कम थी। पिताजी कहते थे कि बाइक चलाने का इतना ही शौक है, तो इन्हें रिपेयर करना भी आना चाहिए। पिताजी की बात मानने के लिए मैं रोज कुछ घंटे गैराज में उनकी मदद करने के लिए आती थी। ऐसे में हुआ यह कि बाइक चलाने से पहले ही मैं उसकी मरम्मत का काम सीख गई। मैं पढ़-लिखकर कुछ करना चाहती थी। लेकिन ईश्वर ने मेरा भाग्य अलग तरीके से लिख रखा था। एक दिन मेरे पिताजी के साथ एक हादसा हुआ, जिसमें उनके एक हाथ की चार उंगलियां कट गईं। वह अब रिपेयरिंग का काम नहीं कर सकते थे। यही एक चीज थी, जो उन्हें आती थी। मैं घर में सबसे बड़ी थी। मां घर की चारदीवारी से बाहर नहीं निकलती थीं। गैराज में किसी को काम देने का भी मतलब नहीं था, क्योंकि उसे वेतन देना पड़ता, जिससे हमारी आय कम हो जाती। कुछ दिनों तक विचार-विमर्श के बाद तय हुआ कि गैराज की जिम्मेदारी मुझे संभाल लेनी चाहिए। मेरी मां ऐसा नहीं चाहती थीं, क्योंकि मैं लड़की थी। पर और कोई रास्ता भी नहीं था। इसमें एक मुश्किल यह थी कि गाड़ियों का मरम्मत का काम लड़कियां नहीं करती थी। शुरुआत में पिता गैराज में बैठते और ग्राहकों से कहते कि मेरी बेटी को एक मौका दीजिए। उसके बाद आप कोई फैसला लेने के लिए स्वतंत्र हैं। बहुत कम उम्र से गाड़ियों की मरम्मत करने के कारण इस काम में मैं पारंगत हो गई थी। इसलिए अपने ग्राहकों को मैंने निराश नहीं किया। उनकी गाड़ियों की रिपेयरिंग मैंने वैसे ही की, जैसे मेरे पिताजी करते थे। मैं दिन भर गैराज संभालती और रात में अपनी पढ़ाई पूरी करती। दो साल बाद बारहवीं की परीक्षा देने के बाद मैंने गैराज का जिम्मा पूरी तरह संभाल लिया। लेकिन तब भी मेरे रास्ते में अनेक चुनौतियां थीं। बहुत लोगों को यकीन ही नहीं होता था कि एक लड़की गाड़ियों की रिपेयरिंग भी कर सकती है। पिता के पूरी तरह घर बैठ जाने के बाद अनेक ग्राहकों ने गैराज में आना बंद कर दिया। मेरे पिता के ज्यादातर ग्राहक ऑटो रिक्शा वाले थे। इनमें से कई ऑटो रिक्शा वालों पर भारी देनदारी बनती थी। ऑटो रिक्शा वाले मरम्मत के पैसे तुरंत नहीं देते थे। इसलिए धीरे-धीरे मैंने गैराज में ऑटो रिक्शा रिपेयरिंग का काम बंद कर दिया और सिर्फ दोपहिया वाहनों की मरम्मत का काम करने लगी। आज इस गैराज से मुझे मासिक पचास हजार रुपये की आय होती है। इसके अलावा मैं अलग से इंटीरियर डिजाइनिंग का काम भी करती हूं। एक समय ऐसा था, जब गैराज में एक भी कर्मचारी रखने की हमारी हैसियत नहीं थी। आज मेरे गैराज में तीन मैकेनिक काम करते हैं और मैं सिर्फ उनका कामकाज देखती हूं। मैं सुबह-शाम गैराज जाती हूं और दोपहर को इंटीरियर डिजाइनिंग का काम करती हूं। आसपास की अनेक लड़कियां मेरे जीवन से प्रभावित हैं। मैं उन्हें हमेशा यही कहती हूं कि ऐसा कोई काम नहीं है, जो औरतें न कर सकती हों।

पिता की उंगलियां कटने के बाद मैंने गैराज संभाला, जिससे मुझे मासिक पचास हजार रुपये की आय होती है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

इन महिलाओं को भी याद रखें

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के दिन हम शहीदों की बहादुर विधवाओं के नाम करें और इनकी मांग स्वीकार करें। सीमा की सुरक्षा करने वाले जवानों और अधिकारियों की विधवाएं करीब एक महीने से हमसे संवेदनशीलता की मांग कर रही हैं।

आप तक यह लेख आज अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर पहुंचा है। इस अवसर पर महिला आंदोलनों से जुड़े लोग, दुनिया भर की महिलाओं और उनके संघर्षों को याद करते हैं। पर यह सच है कि महिलाओं का एक बड़ा उपेक्षित हिस्सा है, जिन्हें हम उतना याद नहीं करते, जितना करना चाहिए-जैसे, एकल महिलाएं, परित्यक्ता, कुंवारी, तलाकशुदा और विधवा महिलाएं। ये वे महिलाएं हैं, जिन्हें समाज का बड़ा हिस्सा तिरस्कार और बहिष्कार का शिकार बनाता है।

पिछले एक महीने से सीमा की सुरक्षा करने वाले जवानों और अधिकारियों की विधवाएं हमें चारों तरफ से घेरे हुए हैं और हमसे हमदर्दी नहीं, संवेदनशीलता की मांग कर रही हैं। इन विधवाओं के सवालों को जवाब मिलना चाहिए, उनकी चिंताओं को समझा जाना जरूरी है।

सीआरपीएफ के हमले में शहीद हुए कर्नाटक के जवान एच गुरु की शवयात्रा में हजारों लोगों ने हिस्सा लिया और नारे लगाए। उनकी विधवा कलावती को मुख्यमंत्री ने 25 लाख रुपये देने का वायदा किया; इन्फोसिस ने दस लाख देने की घोषणा की; एक फिल्म नायिका ने आधा एकड़ जमीन उसके नाम करने को कहा। इस बीच खबर आई कि कलावती पर ससुराल वाले अपने देवर से शादी करने का दबाव बना रहे हैं, ताकि जो धन मिल रहा है, वह परिवार में रहे। पर कलावती और उसकी सास ने इसका खंडन किया।

पश्चिम बंगाल के हावड़ा जिले के बबलू सांतरा की विधवा मीता इतिहास की शिक्षिका है। जब उससे पूछा गया कि क्या वह अपने पति की मौत का बदला चाहती है, तो उसने जवाब दिया कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है। उसका मानना है कि अगर सरकार सावधानी बरतती, तो यह हादसा नहीं होता। उसके शब्द बड़े तीखे हैं : 'केंद्र सरकार हमारे जवानों की सुरक्षा के बारे में बिलकुल चिंतित नहीं है, वह तो अपने ही एजेंडे में लिप्त है।' सोशल मीडिया पर अंध-राष्ट्रभक्त बरस पड़े : मीता अपने पति से प्यार ही नहीं करती थी; उसकी मौत से उसे खुशी हो रही है, इत्यादि।

सुभाषिनी सहगल अली

विजेता वायुसेना के स्क्वाड्रन लीडर, निनाद मान्दव्गाने की, जो हाल में बड़गाम में हेलीकाप्टर क्रैश में मारे गए थे, विधवा हैं। पति के अंतिम संस्कार चल रहे थे और उसने संवाददाताओं से अपील की : 'लोगों को बताओ, सोशल मीडिया पर लड़ने से कुछ हासिल नहीं होगा। अगर तुम्हारे अंदर इतनी हिम्मत है, तो जाकर सीमा पर लड़ो। अगर तुम सच में कुछ करना चाहते हो तो सुरक्षा बलों में भर्ती हो जाओ। अगर यह भी संभव नहीं, तो छोटे काम भी मददगार साबित होते हैं। अपने पड़ोस को साफ रखो। कूड़ा मत फेंको। खुले में शौच मत करो। महिलाओं को परेशान मत करो। सांप्रदायिक घृणा फैलाना बंद करो। छोटे कार्य भी बहुत दूर तक असर डालते हैं।

ज़ाहिर है, बड़बोले राष्ट्रवादियों को इन महिलाओं की बातों से आग लग गई। हिंसात्मक धमकियों का मुकाबला ये हिम्मती विधवाएं लगातार कर रही हैं। मैनपुरी में राम वकील की विधवा गीता देवी, कहती हैं कि 'सुबूत के तौर पर हमें पुलवामा हमले के बाद अपने जवानों की लाशें मिली हैं, लेकिन पाकिस्तान पर हवाई हमलों का कोई सुबूत नहीं मिला है।'

आठ मार्च का दिन हम अपनी इन बहादुर बहनों के नाम करें और संवेदनशीलता की इनकी मांग को स्वीकार करें। उनकी आवाज से अपनी आवाज जोड़ते हुए सरकार से उनके सवालों का जवाब मांगे; शांति और भाईचारे की उनकी अपील को ताकत दें।

-लेखिका माकपा, पोलित ब्यूरो की सदस्य हैं।

हरियाली और रास्ता

सुंदर जी, छात्र और चुनौतियां

बहुराष्ट्रीय कंपनी के अधिकारी सुंदर जी की कहानी, जिन्होंने छात्रों को चुनौतियों से निपटने का गुर सिखाया।

एक बहुराष्ट्रीय कंपनी के प्रमुख अधिकारी सुंदर जी एक कॉलेज में छात्रों से बातचीत कर रहे थे। एक छात्र ने उनसे पूछा, सर, आपकी जिंदगी में कई चुनौतियां आती होंगी। आप उनका हल कैसे ढूंढते हैं? सुंदर सर मुस्कराते हुए बोले, चुनौतियां हमें कमजोर करने के लिए नहीं, बल्कि और दृढ़ करने के लिए आती हैं। पर हमारी सफलता इससे निर्धारित होती है कि हम उन्हें किस तरह देखते हैं। आप सबको एक कहानी सुनाता हूं। एक बार एक महिला कुछ दोस्तों के साथ ढाबे में खाना खाने गई। सभी सहेलियां खाना खा रही थीं, तभी कहीं से एक कॉकरोच उड़कर उस महिला के कंधे पर आकर बैठ गया। बस, फिर क्या था! महिला चीखने-चिल्लाने लगी। यह देख वहां हलचल मच गई। महिला की उछल-कूद देख कॉकरोच ने फिर उड़ान भरी और इस बार दूसरी टेबल पर बैठी एक महिला के कान पर जाकर बैठ गया। पिछली बार की तरह इस बार भी काफी हंगामा देखने को मिला। पीछे खड़ा एक वेटर सब कुछ छोड़कर महिला के बचाव में आ गया। जब तक वेटर उसे पकड़ता, कॉकरोच फिर से उड़ा और इस बार वेटर की नाक पर बैठ गया। वेटर एकदम स्थिर होकर खड़ा हो गया। फिर उसने धीरे से हाथ उठाया और कॉकरोच को बाहर फेंक दिया। मैं भी वहीं एक कोने में बैठा चाय पी रहा था। मैं सोचने लगा, महज एक कॉकरोच के किसी पर बैठ जाने से होटल में इतनी हलचल मच गई। कॉकरोच बैठा तो वेटर के ऊपर भी था, वह तो शांत था। यानी वह हलचल कॉकरोच की वजह से नहीं, बल्कि कॉकरोच के बैठने से जो घबराहट पैदा हुई, उसे संयमित न कर पाने की वजह से हुई थी। तो इसका सारांश यह है कि हमारी सफलता इस पर निर्भर करती है कि हम चुनौतियों के प्रति कैसी प्रतिक्रिया करते हैं।

चुनौती नहीं, बल्कि उसके प्रति प्रतिक्रिया हमें सफल या विफल बनाती है।

खुली खिड़की

आबादी में वृद्धि

दुनिया की जनसंख्या निरंतर बढ़ रही है और उसके साथ ही भोजन, आवास, रोजगार जैसी कई तरह की चुनौतियां भी पैदा हो रही हैं। पिछले बीस वर्षों में आबादी में सबसे ज्यादा वृद्धि नाइजीरिया में हुई है, जबकि इसी अवधि के दौरान हमारे देश की आबादी में 34 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है।

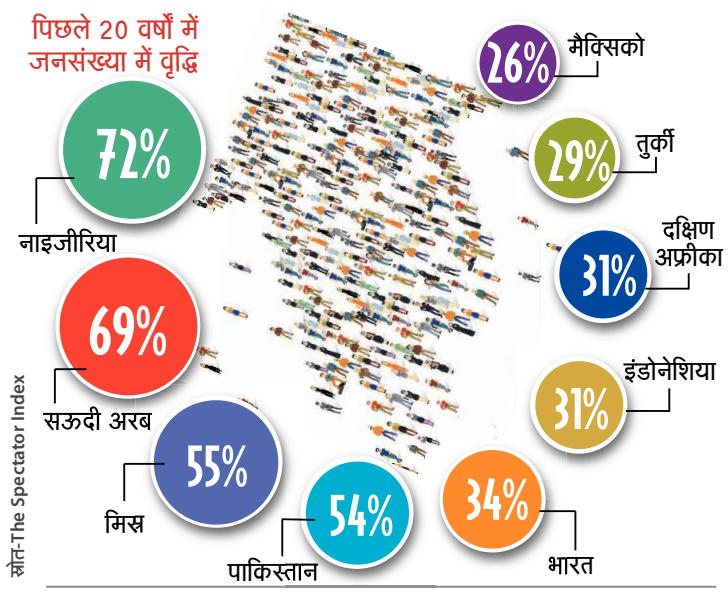

अहंकार ठीक नहीं

महाभारत के युद्ध में अर्जुन और कर्ण के बीच घमासान चल रहा था। अर्जुन का तीर लगने से कर्ण का रथ पच्चीस-तीस हाथ पीछे खिसक जाता, जबकि कर्ण का तीर लगने से अर्जुन का रथ सिर्फ दो-तीन हाथ पीछे खिसकता था। पर श्रीकृष्ण कर्ण की तारीफ किए जा रहे थे, वह अर्जुन की प्रशंसा में कुछ न कहते। यह देख अर्जुन बड़ा व्यथित हुआ। उसने कहा, हे कृष्ण, आप मेरे शक्तिशाली प्रहारों के बजाय कर्ण के कमजोर प्रहारों की तारीफ कर रहे हैं। कर्ण में ऐसा क्या है? श्रीकृष्ण बोले, तुम्हारे रथ की रक्षा के लिए ध्वजा पर हनुमान जी, पहियों पर शेषनाग जी और सारथी के रूप में स्वयं नारायण हैं। इसके बावजूद कर्ण के प्रहार से तुम्हारा रथ अगर एक हाथ भी पीछे खिसकता है, तो उसके पराक्रम की तारीफ तो करनी होगी। अर्जुन को श्रीकृष्ण की यह बात अच्छी नहीं लगी। श्रीकृष्ण ने ताड़ लिया कि अर्जुन को अपने पराक्रम का अहंकार हो गया है। उन्होंने उसका अहंकार चूर-चूर करने के बारे में सोचा। कहते हैं कि युद्ध खत्म होने के बाद श्रीकृष्ण ने अर्जुन को पहले रथ से उतरने के लिए कहा। अर्जुन के उतरने के बाद जैसे ही श्रीकृष्ण रथ से उतरे, वह रथ भस्म हो गया। श्रीकृष्ण ने कहा, मैंने तुम्हें पहले ही कहा था कि कर्ण के प्रहारों से यह रथ ध्वस्त हो चुका है, वह तो मेरे कारण अब तक सही-सलामत था। यह सुन अर्जुन का घमंड चूर-चूर हो गया।

सत्संग

-संकलित